ईमाइल दुर्खीम के आत्महत्या सिद्धान्त की वर्तमान भारतीय समाज में प्रासंगिकता : एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण

शीतल
शोध छात्रा, समाजशास्त्र और राजनीति विज्ञान विभाग, समाज विज्ञान संकाय,
दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट, दयालबाग आगरा–282005,

सारांश

प्रसिद्ध समाजशास्त्री इमाइल दुर्खीम द्वारा आत्महत्या का सिद्धान्त 'समाज' को वास्तविक कारण मानते हुए प्रतिपादित किया गया। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से, दुर्खीम के आत्महत्या सिद्धान्त सम्बन्धी परिणामों की प्रासंगिकता को, वर्तमान भारतीय समाज में बढ़ती आत्महत्या की घटनाओं को दृष्टिगत करना एक महत्वपूर्ण प्रयास है। दुर्खीम के आत्महत्या सिद्धान्त की मान्यताओं का अनुसरण करते हुए भारतीय समाज के लोगों में बढ़ते आत्महत्या व्यवहार की सामाजिक एकीकरण के उच्चतम–निम्नतम स्तर और आत्महत्या के दरों के बीच सहसंबंध स्थापित करके सामाजिक कारणों को ज्ञात करने में सहायता मिलती है तथा यह भी स्पष्ट होता है कि आज के व्यस्त जीवन में, समाज में सामाजिक एकीकरण के स्तर में कमी हो रही है जिसके कारण सामाजिक मूल्यों, मानदण्डों प्रतिमान की महत्वता घटती प्रतीत जा रही है। दुर्खीम मानते हैं कि आत्महत्या एक सामाजिक क्रिया है न कि वैयक्तिक क्रिया। एक विशिष्ट समाज के सभी सदस्यों पर लागू होता है। दुर्खीम के सिद्धान्त की मान्यताओं एवं वर्तमान भारतीय समाज में व्याप्त सामाजिक कारणों के द्वारा घटित आत्महत्या दरों के बीच सम्बन्ध स्थापित करके व्याख्या एवं विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन से दुर्खीम द्वारा दी गयी आत्महत्या सम्बन्धी कुछ निष्कर्षो की प्रासंगिकता भारतीय समाज पर लागू दृष्टिगत होती है। यह ज्ञात होता है कि वर्तमान भारतीय समाज में सामाजिक–कारणों के आधार पर आत्महत्याएं अधिक होती हैं।

मुख्य शब्द : आत्महत्या, आत्महत्या का विचार एवं प्रयास, आत्महत्या का सामाजिक कारक, सामाजिक एकीकरण–नियमन का स्तर।

प्रस्तावना

'मानव जीवन' एक बहुमूल्य निधि है। समाज में दो प्रकार की इच्छा रखने वाले व्यक्ति होते हैं, एक वह जो सुखी, जीवन जीने हेतु प्रत्येक परिस्थितियों से अनुकूलन कर लेता है और दूसरी ओर वह जो सुखी जीवन चाहता है परन्तु विपरीत परिस्थतियों से अनुकूलन नहीं कर पाता है। इस सन्दर्भ में कहा जा सकता है कि सुखी जीवन जीना एक कला है जो इस कला को व्यवहार में ढाल लेता है उसे कोई विपरीत परिस्थिति नहीं विघटित कर सकती। आज के भौतिक सुख के प्रति बढ़ते आकर्षण को ही मनुष्य ने केवल शारीरिक सुख–सुविधाओं को ही वास्तविक सुख मान

लिया है इसलिए वह आशानत है, चिन्ताग्रस्त है, जिससे उसे केवल शारीरिक मानसिक रोग हो रहे है तथा मनुष्य को अविनाशी सुख प्राप्त हो रहा है (वर्मा, 2010)।

मानव इतिहास की भॉति आत्महत्या का इतिहास भी उतना ही पुराना रहा है। प्राचीन काल से ही आत्महत्या को विभिन्न प्रकार से महिमामंडित किया गया है, विलाप किया गया है और यहाँ तक कि निंदा भी की गई है (परामर्शना, 2008)। प्राचीन भारतीय ग्रंथों में शौर्य की कहानियाँ है जिनमें शर्म और उपेक्षा से बचने के साधन के रूप में आत्महत्या को महिमामंडित किया गया है। रामायण और महाभारत के महाकाव्यों में भी आत्महत्या का उल्लेख मिलता है (भुगरा, 2005)। वेद धार्मिक कारणों से आत्महत्या की अनुभूति देते है और मानते हैं कि सबसे अच्छा बलिदान स्वयं का जीवन है (विजय कुमार, 2004)।

आत्महत्या शब्द की गणना सबसे पहले 'सर थॉमस ब्राउन' ने सन 1642 में अपनी पुस्तक 'Religiomedici' में लोगों की मनो–प्रतिक्रियाओं के मिश्रण एवं भिन्नता के सन्दर्भ में की थी। आत्महत्या से तात्पर्य है ''किसी के अस्तित्व को समाप्त करने का एक नियोजित दृढ–संकल्प, मृत्यु का एक अप्रत्याशित तरीका, जहॉ मरने की इच्छा व्यक्ति की भीतर उत्पन्न होती है और किसी के जीवन को समाप्त करने के लिए अज्ञात कारणों की उपस्थिति होती है।'' आत्महत्या का प्रयास – एक गैर घातक परिणाम के साथ, एक आत्म–हानिकारक व्यवहार है। आत्महत्या का विचार – गम्भीर आत्म–हानिकारक व्यवहार के बारे में विचार या खुद के मारने के बारे में विचार से है (कपलान एवं सैडॉक, 2015)।

प्रसिद्ध फ्रासीसी समाजशास्त्री ईमाइल दुर्खीम (1858–1917) ने 1897 में अपनी पुस्तक "The Suicide" में आत्महत्या के जैविकीय, मनोवैज्ञानिक, वैयक्तिक, भौगोलिक तथा जनसांख्यिकीय कारणों से होने वाले स्पष्टीकरण को खारिज करते आत्महत्या का सामाजिक सिद्धान्त दिया। आत्महत्या को सामाजिक तथ्य मानते हुए समाजशास्त्र की अध्ययन वस्तु स्वीकार की। उन्होंने यूरोपीय समाजों के पुलिस रिकार्ड से उपलब्ध आँकड़ों का तुलनात्मक अध्ययन कर, आत्महत्या का सांख्यिकीय विश्लेषण किया। दुर्खीम के अनुसार, ''आत्महत्या शब्द का प्रयोग उन सभी मृत्युओं के लिए किया जाता है जो कि पीड़ित के स्वयं के सकारात्मक या नकारात्मक ऐसे कार्य के प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष परिणाम होते हैं जिनके बारे में यह (व्यक्ति) जानता है कि वह कार्य इसी परिणाम (मृत्यु) को उत्पन्न करेगा (पृ.सं. 44)।''

दुर्खीम का मानना था कि आत्महत्या के वास्तविक कारण सामाजिक कारण होते है क्योंकि एक विशिष्ट परिस्थति में समाज व्यक्ति को आत्महत्या करने के लिए प्रेरित करता है। किसी भी अन्य मानवीय व्यवहार की तरह, आत्मघाती व्यवहार भी व्यक्ति प्रासंगिक सामाजिक परिस्थितियों से प्रभावित होता है। सामाजिक कारण के संदर्भ में आत्महत्या और उसके प्रकारों की व्याख्या करने के लिए दो चरों (जो सामाजिक संदर्भ में परिस्थितियों के संकेतक के रूप में हैं) सामाजिक एकीकरण और सामाजिक नियमन की बात की।

दुर्खीम का विश्लेषण यह था कि एकीकरण या नियमन की उच्चतम और निम्नतम दोनों मात्रा या परिणाम एक व्यक्ति को आत्महत्या के लिए अतिसंवेदनशील बनाती है। यदि कोई व्यक्ति समाज में ठीक से एकीकृत नहीं होता है तो यह उसे आत्महत्या के प्रति संवेदनशील बनाता है। इसी तरह, यदि कोई व्यक्ति समाज में अधिक एकीकृत है तो उसे आत्महत्या के लिए अतिसंवेदनशील बना देता है। एकीकरण और नियमन की व्याख्याओं के आधार पर दुर्खीम ने आत्महत्या को निम्न लिखित चार प्रकारों में विभाजित किया–

1. **परोपकारी आत्महत्या** – अति एकीकरण के कारण व्यक्ति अपने व्यक्तित्व को खो देता है और केवल अपने समूह के हित के लिए अपने जीवन का बलिदान करने के लिए तैयार हो जाता है।
2. **अहंकारी आत्महत्या** – कम एकीकरण के परिणाम स्वरूप, व्यक्ति आत्म केन्द्रित, अकेला, अन्तर्मुखी हो जाता है तो सामूहिक जीवन में भाग नहीं लेता है और आत्महत्या कर लेता है।
3. **प्रतिमानहीनता या एनोमी आत्महत्या** – एक व्यक्ति पर समाज के कम नियमन के परिणाम स्वरूप होती है। एनोमिक स्थिति के कारण व्यक्ति को खुद को एक एनोमिक स्थिति में समायोजित करने में कठिनाई होती है और आत्महत्या कर लेता है।
4. **भाग्यवादी (घातक) आत्महत्या** – जब समाज द्वारा नियम, मानदण्ड और अन्य बाहरी कारक, किसी व्यक्ति पर अत्यधिक दबाव डालते हैं तो स्थिति उसके लिए असहनीय हो जाती है।

दुर्खीम के अध्ययन सम्बन्धी निष्कर्ष – दुर्खीम ने आत्महत्या सम्बन्धी सिद्धान्त के सम्बन्ध में आंकड़े एकत्रित किये और उन आँकड़ों के विश्लेषण के आधार पर कुछ निष्कर्ष व्यक्त किये – 1. आत्महत्या की दर प्रत्येक वर्ष लगभग एक सी रहती है, 2. स्त्रियों की अपेक्षा पुरूष अधिक आत्महत्याएं करते हैं, 3. कम आयु के लोगों की अपेक्षा, अधिक आयु के व्यक्तियों में आत्महत्या की दर अधिक पायी जाती है।

समाजशास्त्र में शास्त्रीय प्रतिपादक समाजशास्त्रीय के रूप में ईमाइल दुर्खीम का प्रतिष्ठित व्यक्तित्व तथा महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उन्होंने समाज शास्त्र में जो भी अवधारणाएँ, सिद्धान्त दिये हैं उन्हें 'समाज' को सर्वोपरि ओर केन्द्र में रखते हुए, वृहद अध्ययन सम्बन्धी आधार पर प्रतिपादित किया है। इसी सन्दर्भ में उन्होंने आत्महत्या का सामाजिक सिद्धान्त दिया था। दुर्खीम द्वारा यूरोप देश के सन्दर्भ में दिये गये आत्महत्या सम्बन्धी कुछ मान्यताओं की, वर्तमान भारतीय समाज में प्रासंगिकता लागू होती है। राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो, 2022 के तथ्यों के आधार पर, सामाजिक एकीकरण के स्तर और आत्महत्या दर के बीच सहसम्बन्ध स्थापित करके आत्महत्या की सामाजिक व्याख्या प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के भारत में दुर्घटनात्मक मृत्यु एवं आत्महत्याएँ 1967–2022 की रिपोर्ट के अनुसार, वर्ष 1967 में भारत की कुल जनसंख्या 52.1 करोड़ थी तथा आत्महत्या पीड़ितों की संख्या 38,829 (7.4%) थी,

जो कि वर्तमान समय (वर्ष 2022), में आत्महत्या पीड़ितों की संख्या 170924 (12.4%) हो गई है। इससे स्पष्ट होता है कि आत्महत्या की दर में निरन्तर वृद्धि हो रही है।

वर्ष 1967–2022 के दौरान भारत में आत्महत्या दर का विवरण

क्र.सं.	वर्ष	आत्महत्या की कुल संख्या	मध्यवर्षीय अनुमानित जनसंख्या (लाख से अधिक)	आत्महत्या की दर का प्रतिशत
1.	1967	38829	521987.06	7.4
2.	1977	39718	651685.6	6.09
3.	1987	58568	815716.1	7.17
4.	1997	95829	100233.5	9.56
5.	2007	122637	118969.1	10.30
6.	2017	129887	13233.8	9.90
7	2020	153052	13563.8	11.3
8.	2021	164033	13671.8	12.0
9.	2022	170924	13797.5	12.4

स्त्रोत : National Crime Records Bureau, Accidental Death & Sucides in India (1967-2022)

समस्या कथन

किसी समाज के लोगों में आत्महत्या का विचार एवं प्रयास जैसी भावना होना, उस समाज के मूल्य प्रतिमान, मानदण्ड, सामंजस्य एवं नियंत्रण की खराब व्यवस्था का प्रतीक होते हैं। दुर्खीम के अनुसार समाज सर्वोपरि है। अतः व्यक्ति को अपने अनुसार रखने का प्रयत्न करता है और व्यक्ति ऐसा करने में असफल हो जाता है तो समाज उसका अस्तित्व समाप्त कर देता है। इसी प्रकार भारतीय समाज में भी आत्महत्या की दर के सामाजिक कारण ही दिखाई पड़ते हैं। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो, भारत, भारत में दुर्घटनात्मक मृत्यु एवं आत्महत्यायें (ADSI, 1967-2022) की रिपोर्ट के अनुसार, भारत में आत्महत्या पीड़ितों की संख्या 38829 से 170924 (7.4 से 12.4 प्रतिशत) में निरंतर वृद्धि हो रही है। तथा रिपोर्ट आधारित आत्महत्या के कारणों की जाँच करने पर यह ज्ञात होता है कि भारतीय समाज में बढ़ती आत्महत्या दर के लिए सामाजिक कारण जैसे बढ़ती पारिवारिक समस्याएँ, अस्वास्थय, मद्यपान, वैवाहिक समस्याएँ, प्रेम सम्बन्ध की असफलता, ऋणग्रस्तता, परीक्षा–नौकरी की असफलता आदि उत्तरदायी प्रतीत हो रहे हैं। दुर्खीम द्वारा प्रतिपादित आत्महत्या के प्रकारों की प्रासंगिकता भारतीय समाज में दृष्टिगत किये जाने पर यह स्पष्ट होता है कि भारतीय समाज में परोपकारी, भाग्यवादी, प्रतिमानहीनता आत्महत्या की तुलना में, अहंकारी प्रकार की आत्महत्या की प्रवृत्ति अधिक व्याप्त है जो कि समाज में व्यक्ति के कम एकीकरण का परिणाम की स्थिति है। कम एकीकरण की स्थिति से व्यक्ति के अकेलापन, निराशा, कम आत्म–सम्मान एवं जीवन कौशल की कमी जैसे कारकों की प्रधानता दृष्टिगत होती है। वर्तमान समय में आत्महत्या और अन्य विघटित परिस्थितियों के लिए एक सामाजिक समस्या और

जिम्मेदार होती है कि आजकल के अधिक प्रतिगतिशील, प्रतिस्पर्धा वाले समाज में प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में प्रगति और सफलता की प्राप्ति में इतना व्यस्त हो गया है कि उसने खुद को स्वार्थी, अकेला, उपेक्षित कर लिया है। यह स्थिति समाज में सामूहिक रूप से व्याप्त है जो कि कहीं न कहीं आत्महत्या, अपराध जैसी समस्याओं को बढ़ावा देते हैं।

अध्ययन का समाजशास्त्रीय महत्व

वर्तमान भारतीय समाज में, सामाजिक कारक के रूप में आत्महत्या का अध्ययन समाजशास्त्रीय दृष्टि से महत्वपूर्ण है क्योंकि प्रस्तुत अध्ययन से दुर्खीम द्वारा प्रतिपादित आत्महत्या के प्रकार एवं कारण की व्याख्या भारतीय समाज में प्रासंगिकता सिद्ध प्रतीत होती है तथा सामाजिक–आर्थिक स्थिति, अधिवास, लिंग, व्यवसाय, शिक्षा आदि आधारों पर भारतीय समाज में आत्महत्या के सामाजिक कारणों को ज्ञात करने में सहायता मिलती है। यह भी स्पष्ट होती है कि 19वीं सदी में दुर्खीम द्वारा आत्महत्या की समस्या के सम्बन्ध में जो विचार परिणाम उस समय की परिस्थतियों के संदर्भ में दिये गये थे, इतने वर्ष के पश्चात् भारतीय समाज की वर्तमान परिस्थतियों के सन्दर्भ में उनके सिद्धान्त की मान्यता का स्पष्टीकरण होता है कि नहीं। प्रस्तुत अध्ययन भारतीय समाज में बढ़ती आत्महत्या की वृद्धि दर के लिए समाज वास्तविक कारण के रूप में उत्तरदायी है कि नहीं, यह व्याख्या एवं विश्लेषण करने में सहायक प्रतीत होता है। समाज में सामाजिक एकीकरण के अधिकता निम्नता के स्तर को ज्ञात करने में सहायता प्राप्त होती है जिससे समाज में लोगों की सामूहिक भागीदारी की स्थिति का पता चलता है।

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

1. **उपेन्द्र ठाकुर** (1963) ने अपनी पुस्तक "The History of Suicide in India : An Introduction" में भारत में आत्महत्या समस्या के उद्भव की विस्तारपूर्वक व्याख्या की और उन्होंने बताया कि भारतीय समाजशास्त्रियों ने आत्महत्या अध्ययन के सम्बन्ध में उदासीनता एवं कम प्रगति की है जबकि पश्चिमी समाजशास्त्रियों ने आत्महत्या अध्ययन में अधिक प्रगति की है। लेखक ने प्राचीन और मध्यकालीन काल के विभिन्न शास्त्रीय मनोवैज्ञानिक, समाजशास्त्री, अपराधशा़स्त्रियों के योगदान की व्याख्या करते हुए आत्महत्या के कारण, विधि तथा प्रकार के सम्बन्ध में विस्तारपूर्वक अध्ययन प्रस्तुत किया।
2. **राजीव राधाकृष्णन** और **चित्तरंजन एंड्राडे** (2012) ने अपने लेख "Suicide : Indian Respective" में भारतीय परिप्रेक्ष्य के संदर्भ में आत्महत्या के ऐतिहासिक, महामारी विज्ञान, जनसांख्यिकीय कारकों की जाँच की तथा भारत में आत्महत्या के लिंग, सामाजिक स्थिति, वैवाहिक स्तर, मनोविकार, क्षेत्र आधारित कारकों की व्याख्या एवं विश्लेषण किया और आत्महत्या के तरीकों, प्रेरणा तथा निवारण सम्बन्धी पहलुओं पर अपने विचार प्रस्तुत किये।
3. **लक्ष्मीविजय कुमार** (2010) ने अपने लेख "Indian Research on Suicide" में बताया कि भारत में आत्महत्या की वृद्धि दर के सन्दर्भ में 1975–2005 तक के दशकों के निरन्तर वृद्धि दर रही

है। लेखक ने सम्बन्धित आँकड़ों के आधार पर जोखिम कारकों की व्याख्या प्रस्तुत की तथा भारत के अलग–अलग राज्यों, समुदायों के घटित आत्मघाती और गैर आत्मघाती व्यवहार सम्बन्धी, आत्महत्या घटनाओं को एक सामाजिक और सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रतिक्रिया का जोखिम कारक साबित करते हुए अध्ययन प्रस्तुत किया।

शोध पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन की शोध पद्धति एवं शोध प्ररंचना इस प्रकार है –

अध्ययन का उद्देश्य

1. दुर्खीम के सिद्धान्त और भारत में लिंग आयु वर्गीय आधारित आत्महत्या दर के सम्बन्ध का अध्ययन करना।
2. दुर्खीम के सिद्धान्त सम्बन्धी निष्कर्ष एवं भारत में सामाजिक कारण आधारित आत्महत्या दर, सम्बन्धों का अध्ययन करना।

शोध प्ररंचना

प्रस्तुत अध्ययन ''इमाइल दुर्खीम' के आत्महत्या सिद्धान्त की भारतीय समाज में प्रासंगिकता : एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण'' के सम्बन्ध में, भारतीय समाज के सामाजिक कारक के रूप में आत्महत्या का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन है। प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन है जिससे भारतीय समाज के लोगों में आत्महत्या की बढ़ती समस्या के सम्बन्ध में सामाजिक कारणों को वास्तवकि कारण मानते हुए व्याख्या की गयी है। अतः सिद्धान्त की व्याख्या और भारत के आत्महत्या तथ्यों के बीच सम्बन्ध का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र

कोई भी अध्ययन निर्वात में नहीं हो सकता बल्कि वह निश्चित क्षेत्र से ही होता है। इसलिए अध्ययन को पूरा करने के लिए समग्र भारतीय समाज को क्षेत्र रूप में चयन किया है। वर्ष 2022 की Technical Group on Population Projection Report के अनुसार भारत की जनसंख्या 2022 की मध्य वर्ष अनुमानित जनगणना के अनुसार, 1356980 (लाख से अधिक) अर्थात 134 करोड़ है तथा जिसमें 697571 पुरूष और 659409 महिला जनसंख्या है।

अध्ययन स्त्रोत

प्रस्तुत अध्ययन को पूरा करने के लिए द्वितीयक स्त्रोतों से प्राप्त, द्वितीयक प्रकार के तथ्यों को संकलित किया गया है। द्वितीयक स्त्रोतों में विभिन्न पुस्तकें, पत्र–पत्रिकाए, समाचार–पत्र, सरकारी रिपोर्ट आदि सम्मिलित हैं।

दुर्खीम के सिद्धान्त एवं भारत में लिंग एवं आयु वर्गीय आधारित आत्महत्या दर के सम्बन्ध में अध्ययन करना।

दुर्खीम का मानना था कि आत्महत्या कि घटना को सामाजिक तत्व या कारक के सन्दर्भ में ही समझा जा सकता है। उन्होंने अपने आत्महत्या सम्बन्धी तथ्यों के विश्लेषण अध्ययन के आधार पर निष्कर्ष निकाला कि–

1. महिलाओं की तुलना में पुरूष अधिक आत्महत्या करते है।
2. कम उम्र के लोगों की तुलना में, अधिक उम्र के लोगों मे आत्महत्या अधिक होती है।

दुर्खीम की इन मान्यताओं और भारत के आत्महत्या तथ्यों के आधार पर सम्बन्धों को इस प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है –

वर्ष 2022 के दौरान लिंग और आयु वर्ग द्वारा आत्म हत्या पीड़ितो का विवरण

आयु वर्ष	पुरूष	महिला
18 वर्ष से कम	4616	5588
18 वर्ष से अधिक–30 वर्ष से कम	38259	20828
30 वर्ष से अधिक–45 वर्ष से कम	42029	12317
45 वर्ष से अधिक–60 वर्ष से कम	26108	5812
60 वर्ष से अधिक	11712	3627

स्त्रोत : National Crime Records Bureau, Accidental Death & Sucides in India (1967-2022)

उपर्युक्त सारणी से दुर्खीम की मान्यताओं और भारतीय समाज के सन्दर्भ में ज्ञात करने पर यह स्पष्ट होता है कि भारत में मध्य वर्ष 2022 अनुमानित कुल जनसंख्या 137 करोड़ है तथा जिसमें 697571 पुरूष और 659409 महिला जनसंख्या है तथा वर्ष 2022 के दौरान लिंग एवं आयु वर्ग के आधार पर भारत में आत्महत्या–पीड़ितों के विवरण से यह ज्ञात होता है कि महिलाओं की तुलना में पुरूषों में आत्महत्या दर अधिक रही तथा आयु के आधार पर 18 वर्ष से अधिक और 60 वर्ष की उम्र के लोगों में अधिक आत्महत्या होती है। कुल 170924 आत्महत्या–पीड़ितों में से 48172 महिलाएं तथा 122724 पुरूषें में आत्महत्याएं की प्रवृत्ति पायी गयी तथा उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर यह सिद्ध होता है कि दुर्खीम द्वारा प्रतिपादित लिंग और आयु वर्गीय निष्कर्ष वर्तमान समय में भारतीय समाज में लागू होता है कि महिलाओं की तुलना में पुरूषों में आत्महत्या अधिक होती है तथा कम उम्र के लोगों की अपेक्षा, अधिक उम्र के लोगों में आत्महत्या अधिक होती है।

दुर्खीम के सिद्धान्त सम्बन्धी निष्कर्ष एवं भारत में सामाजिक कारण आधारित आत्महत्या दर सम्बन्धों का अध्ययन करना।

दुर्खीम के अनुसार, आत्महत्या के वास्तविक कारणों की पहचान सामाजिक या समाजशास्त्रीय कारणों से ही की जा सकती है। उनके अनुसार जिन समाजों में पारिवारिक सम्बन्ध दृढ होते हैं, वहाँ व्यक्ति परिवार के अन्य सदस्यों के साथ घनिष्ठ सम्बन्धों में बंधा है, वहाँ साथ ही सामाजिक एकीकरण की मात्रा अधिक पायी जाती है और व्यक्ति की आत्महत्या करने की सम्भावना कम

रहती है। भारतीय समाज के सन्दर्भ में इन निष्कर्षो की प्रासंगिकता सिद्ध करने हेतु, भारत के NCRB के आँकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि भारतीय समाज के लोगों की सामाजिक स्थिति के आधार पर आत्महत्याएं अधिक दृष्टिगत होती है। सामाजिक स्थिति के अन्तर्गत, पारिवारिक समस्याएँ, बीमारियॉ, नशाखोरी, विधवा, वैवाहिक सम्बन्धी, प्रेम सम्बन्ध, ऋणग्रस्तता एवं अन्य कारण आदि शामिल हैं।

इस सन्दर्भ में तथ्यों का विवरण इस प्रकार है–

वर्ष 2022 के दौरान, सामाजिक कारण द्वारा आत्महत्या पीड़ितों का विवरण

सामाजिक कारण	पुरूष	महिला
1. पारिवारिक समस्याएँ	37587	16530
2. बीमारी के कारण	21949	9527
3. वैवाहिक सम्बन्धी समस्या	4237	3926
4. प्रेम प्रसंग सम्बन्धी	4730	2897
5. ऋणग्रस्तता	6417	617
6. बेरोजगारी	2836	334
7. परीक्षा में असफलता	1137	958
8. गरीबी	1249	203
9. आजीविका समस्या	1805	278
10. कारण ज्ञात नहीं	12009	5740

स्त्रोत : National Crime Records Bureau, Accidental Death & Sucides in India (1967-2022)

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि भारत में सामाजिक कारणों के परिणामस्वरूप अधिक आत्महत्याएं होती है। सामाजिक स्थिति के कारण भारत में कुल 170924 आत्महत्याएं होती है जिनमें से कुल 122724 पुरूष तथा 48172 महिलाएं आत्महत्याएं करते है। तथा सामाजिक कारण के अन्तर्गत भी सबसे अधिक आत्महत्याएं 31.7 प्रतिशत पारिवारिक समस्याओं से बीमारी के कारण 18.4 प्रतिशत, वैवाहिक सम्बन्धी समस्याओं से 4.8 प्रतिशत, प्रेम प्रसंग समस्याओं से 4.5 प्रतिशत होती है। इसी प्रकार अन्य सामाजिक कारणों जैसे ऋणग्रस्तता एवं दिवालियापन से 4.1 प्रतिशत, बेरोजगारी से 1.9 प्रतिशत परीक्षा में असफलता 1.2 प्रतिशत, आजीविका सम्बन्धी समस्या से 1.2 प्रतिशत, और अज्ञात कारणों से 10.4 प्रतिशत व्यक्ति आत्महत्या करते हैं। इस सन्दर्भ में दुर्खीम द्वारा प्रतिपादित मत की यह प्रासंगिकता सिद्ध होती है कि अधिकांश आत्महत्याएं सामाजिक कारणों का ही परिणाम हैं।

निष्कर्ष

निष्कर्ष के रूप में कहा जात सकता है कि समाजशास्त्र के क्षेत्र में इमाइल दुर्खीम ने आत्महत्या की समाजशास्त्रीय व्याख्या एवं विश्लेषण अध्ययन के आधार पर प्रत्यक्षवादी उपागम की उपयोगिता की प्रामाणिकता को सिद्ध करने का प्रयास किया। दुर्खीम ने यह भी स्पष्ट किया है कि मानवीय व्यवहार के अवलोकन के द्वारा वास्तविक नियमों को खोजा जा सकता है। उन्होंने आत्महत्या सम्बन्धी अध्ययन समाजशास्त्र में अनुसंधान पद्धति के मॉडल (आदर्श) के रूप में माना है। दुर्खीय के इन्हीं कुछ मान्यताओं एवं निष्कर्षो की वर्तमान भारतीय समाज में तथ्यों के विश्लेषण आधार पर प्रासंगिकता सिद्ध करने का प्रयास किया गया, जिसमें यह स्पष्ट होता है कि वर्तमान भारत में महिलाओं की तुलना में, पुरूष अधिक आत्महत्या करते है तथा आयु के आधार पर भी यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि कम उम्र के लोगों की अपेक्षा ाअधिक उम्र के लोग अधिक आत्महत्या करते हैं। दुर्खीम का यह मानना था कि जिन समाजों में सामाजिक सम्बन्ध दृढ होते हैं, सामाजिक एकीकरण की मात्रा अधिक पायी जाती है वहॉ व्यक्तियों की आत्महत्या करने की सम्भावना कम रहती है। इसी प्रकार यह भी स्पष्ट होता है कि सामाजिक कारणों के द्वारा अधिक आत्महत्याएं होती है जिसमें विशेषरूप से पारिवारिक समस्या, वैवाहिक समस्या, बीमारी, प्रेम प्रसंग आदि प्रमुख कारण रहे हैं।

सन्दर्भ

- Thakur, U. (1963), The Hisory of Suicide in India :An Introduction. Munshi Ram Manohar Lla Oriental Publishers and Book Shellers, New Delhi.
- गुप्ता, एम.एल., और शर्मा, डी.डी. (1996), समकालीन समाज शास्त्रीय सिद्धान्त, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा।
- Spaulding, J.A. & Simpson, G.(Ed), (1997), Suicide : A Study in Sociology, New york : The Free press.
- शर्मा, एस. (2010) सुखी जीवन जीने की कला, बुक क्राफ्ट पब्लिशर्स, नयी दिल्ली।
- Radhakrishanan, R, Andrade, C. (2012) – Suicide : An Indian Prespective. Indian Journal of Psychairty, 54(4), 304-319. doi. : 10.410310019-5545.104793
- Accidental Death and Sucides in India (2022). New Delhi : Ministry of Home Affiars, Government of National Crime Records Bureau.
- Thippaiah, S.M. Nanjappa, M.S. & Math, S.B. (2019). Suicide in Inida : A preventable epidemic. Indian Journal of Medical Research, 150(4), 324-327. doi : 10.4103/jmr.IJMR_1805-19
- मुकर्जी, आर. एवं अग्रवाल, बी. (2022), मूर्धन्य समाजशास्त्री इमाइल दुर्खीम. एस.बी.पी.डी. पब्लिकेशन्स, नयी दिल्ली।

- Report of Technical Group on Population Projection, (2022). National Commission on Pupulation Ministry of Health & Family Welfare.